IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता: एक अध्ययन

श्रीमती डिलेश्वरी, शोधार्थी, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग, (छ.ग.)

डॉ. सुरेखा विनोद पाटिल, प्राचार्य, भिलाई मैत्री कॉलेज, रिसाली, भिलाई, (छ.ग.)

शोध सार

शिक्षा प्रत्येक समाज का आधार है, शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। विद्यार्थियों में संवेगात्मक विकास एवं वृद्धि का महत्वपूर्ण पहलू है। समाज में विशेष रूप से किशोरावस्था के बालकों में हिंसा, अनैतिकता, क्रोध, दुःख, अवसाद, आदि को रोकने के लिए उन्हें शिक्षा के माध्यम से उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए। किशोरावस्था में विद्यार्थियों में संवेग अनियंत्रित होते है। उचित मार्गदर्शन से बालकों में संवेगात्मक विकास होता है फलस्वरूप वे संवेगात्मक रूप से परिपक्व हो जाते है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व बालक अपने संवेग पर अंकुश रख सकता है। वह वास्तविक जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम हो जाता है। वह अपने मानसिक और बौद्धिक शक्तियों का उचित प्रकार से प्रयोग करने लगता है। अपने निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होते है। वे अपने लक्ष्य से भटकते नहीं है। तथा अपने विद्यालय में भी मुख्य भूमिका का निर्वाह करते है। अतः विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा उनके संवेग को अधिक महत्व दिया जाये। बालकों के संवेगात्मक विकास पर विद्यालय एवं वातवरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए आवश्यक है कि उन्हें विद्यालय एवं परिवार में स्वस्थ्य एवं अनुकूल वातावरण प्रदान करें क्योंकि स्वस्थ्य एवं अनुकूल वातावरण के द्वारा विद्यार्थियों को अपना संवेगात्मक संतुलन बनाये रखने में सहायता प्रदान होती है।

प्रमुख शब्दावली - संवेगात्मक परिपक्वता, किशोरावस्था, विद्यालय

भूमिका

वर्तमान विकास की तीव्र एवं आधुनिक परिवर्तन के दौड़ में शिक्षा व्यवस्था महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हो गयी है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने निश्चत लक्ष्यों में सफलता प्राप्त करता है। शिक्षा में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था में होते है। इस अवस्था में किशोरों में संवेगों की प्रबलता देखी जाती है, साथ ही उनमें शारीरिक एवं

मानसिक विचारों में अस्थिरता, कल्पना एवं चिन्तन शक्ति अधिक तीव्र होती है। किशोरावस्था के प्रारंभिक वर्षों में संवेगों में तीव्रता तथा अयुक्तिसंगत अधिक होती है। इतना ही नहीं, इस अवधि में संवेगों की अभिव्यक्ति अनियंत्रित ढंग से होती है। किशोर इस अवस्था में अपने सवेंग को नियंत्रिक नहीं कर पाते है। वे अचानक ही किसी बात को लेकर क्रोध, डर एवं दुश्चिंता, उत्सुकता, जलन, हर्ष, दुःख तथा अनुराग दिखानें लगते है। जो उनके संवेगों पर अनियंत्रण को प्रदर्शित करता है। यही वह समय है जिसमें किशोरों को उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है जिससे वे अपने विकास की ओर अग्रसर हो सके। यह भी देखा गया है कि किशोरो को समय पर उचित परामर्श एवं मार्गदर्शन न मिल पाने पर वे अपने लक्ष्य से भटक जाते है तथा अनुचित ढंग से व्यवहार करते है। कभी-कभी किशोर अनियंत्रित संवेग के कारण आत्महत्या करने की कोशिश करते है। परंतु जब किशोरावस्था लगभग समाप्त होने पर होती है अर्थात 19-20 वर्ष की अवस्था में संवेगों की परिपक्वता नियंत्रित ढंग से सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल होती है। इससे उनके संवेगात्मक व्यवहार में काफी स्थिरता आ जाती है। वे संवेगात्मक रूप से परिपक्व होने लगते है। यह स्थिरता उचित मार्गदर्शन और अनुभव के द्वारा प्राप्त होती है।

किशोरावस्था

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था माना गया है। किशोरावस्था को टीनेज् (Teenage) या टीन्स जैसे नाम से भी जाना जाता है जिसका अर्थ होता है 13 से 19 वर्ष की अवस्था। किशोरावस्था जीवन के विकास की एक क्रांतिकारी अवस्था है इस अवस्था में बालक को न बालक समझा जाता है और ना ही उसे पूर्णतः प्रोढ़ समझा जाता है। किशोरावस्था के शाब्दिक अर्थ को देखा जाये तो अंग्रेजी भाषा में इसे एडोलसेन्स (Adolescence) कहा जाता है। । Adolescence शब्द Adolescare के रूप में अंग्रेजी के लैटिन भाषा से उद्घृत हुई है जिसका अर्थ है वृद्धि करना या परिपक्वता की ओर वृद्धि करना। जरशील्ड के शब्दों में ''किशोरावस्था वह समय है जिसमें विचारशील व्यक्ति बाल्यवस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ता है।''

संवेगात्मक परिपक्वता

किसी व्यक्ति या बालक द्वारा अपने संवेगो अर्थात् क्रोध, भय, डर, दुश्चिंता, प्रेम, ईष्र्या, दुःख, जिज्ञासा आदि भावनात्मक गतिविधियों पर नियंत्रण रखना तथा अपने संवेगों को विभिन्न प्रकार के परिस्थितियों के आधार पर प्रदर्शित करना संवेगात्मक परिपक्वता कहलाता है। संवेगात्मक परिपक्वता के विकास से विद्यार्थी अपने एवं दूसरों के भावों को पहचान कर अपने आप को अभिपे्ररित करता है तथा अपने संबंधों में संवेगों को प्रबंधित करने की क्षमता को बढ़ाता है जिससे बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता में निरंतर वृद्धि होती है।

किशोर विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिवक्ता

वर्तमान आधुनिक युग में विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा बढ़ते जा रही है जिसके चलते वे तनाव में रहते है। वे अचानक किसी बात को लेकर क्रोधित हो जाते है तो अचानक खुश हो जाते है वे अपने संवेगो पर नियंत्रण नहीं कर पाते है किन्तु यदि किशोंरों के सही समय पर अभिभावकों एवं शिक्षकों द्वारा उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाये तो वे अपने संवेग पर नियंत्रण करना सीख जाते है वे सांवेगिक रूप से परिपक्व होते चले जाते है। सांवेगिक रूप से परिपक्व बालकों में आत्मविश्वास उच्च होता है जो उनको अपने जीवन में उच्च उपलब्धि होसिल करने में सहायता प्रदान करती है। जिससे वे अपने जीवन को सार्थक बना सके।

चैहान (2013) नें अपने अध्ययन में विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया। अध्ययन में प्रतिदर्श हेतु 500 विद्यार्थियों (छात्र-छात्राओं) का चयन किया गया। विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता के मापन हेतु भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी-मूल्य एवं सम्भावना मूल्य का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष पाया गया कि विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर पाया गया। विज्ञान और वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर पाया गया।

सिहं (2017) नें संवेगात्मक परिपक्वता एवं बुद्धि का शैक्षिक निहितार्थ पर अध्ययन किया । शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता, बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अन्तर्सम्बन्धात्मक अध्ययन करना था। शोध अध्ययन में निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु सांवेगिक परिपक्वता एवं बुद्धि परीक्षण मापनी तथा उनके पूर्व कक्षा में प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि मानकर इसके आधार पर प्रदत्तों का संग्रह किया गया। अध्ययन में निष्कर्ष पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक स्तरीय छात्र, छात्राओं की अपेक्षा अधिक संवेगिक परिपक्व है। उच्चतर माध्यमिक स्तरीय छात्रायें, छात्रों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान है एवं छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि समान है।

झाझडिया (2015) नें अपने अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के गोविन्द नगर के कुल 120 विद्यार्थियों (60 छात्रा व 60 छात्राओं) का चयन किया गया । अध्ययन में संवेगात्मक परिपक्वता, व्यक्तित्व एवं समायोजन के मापन हेतु क्रमशः सिंह एवं भार्गव, पाण्डे तथा सिन्हा एवं सिंह द्वारा निर्मित उपरणों का प्रयोग किया गया। शोध में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मूल्य सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राएँ संवेगाात्मक परिपक्वता एवं व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया गया। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कुमार एवं अन्य (2021) नें कामकाजी एवं गृहिणी महिलाओं के किशोर छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध अध्ययन में महाराष्ट्र के जनपद वर्धा के विद्यालय का चयन किया। न्यादर्श के रूप में कामकाजी एवं गृहणी महिलाओं के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कुल 120 किशोर छात्र एवं छात्राओं को लिया गया, जिसमें 60 छात्र एवं 60 छात्राएँ थामिल थे। किशोर छात्र-छात्राआंे के संवेगात्मक परिपक्वता के मापन हेतु सिंह एवं भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मूल्य सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं के तुलना में कार्यरत महिलाओं के किशोर बालकों की लगभग कहीं-कहीं संवेगात्मक परिपक्वता उच्च है। साथ ही पाया गया कि गृहणी महिलाओं के किशोर छात्र-छात्राओं की तुलना में कामकाजी महिलाओं के छात्र-छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता अधिक है।

शर्मा एवं दुबे (2012) नें शहरी विद्यालयों में अध्ययरत छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया। शोध अध्ययन में शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में से 25 छात्र तथा 25 छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। शोध में पारिवारिक वातावरण के मापन हेतु मिश्रा द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण मापनी एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मापन हेतु सिंग एवं भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन मंे सहसंबंध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों के पारिवारिक वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सहसंबंध नहीं पाया गया। तथा शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत छात्राओं के पारिवारिक वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सहसंबंध नहीं पाया गया।

उपसंहार

यदि हम अपने समाज के विद्यार्थियों की परिस्थितियों का विश्लेषणात्मक रूप से अवलोकन करें तो विद्यार्थियों में उत्पन्न होने वाली कई समस्याओं के मूल कारणों को जानना होगा। वर्तमान दौर में हमारी आवश्यकता की सीमा जरूरतों से ज्यादा हो गयी है। विद्यार्थियों के विकास के लिए यह आवश्यक है कि उनकी भावनाओं को पहचानें, उनके संवेगो को नियंत्रित करने के लिए उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श दे साथ ही साथ ऐसे वातावरण प्रदान करे जिससे वे सकारात्मक व्यक्तित्व वाले बने सके। और यह सब उनकी भावनाओं को प्रबंधित करके किया जा सकता है। परिवार में हम यह देखते है कि बालकों द्वारा कभी-कभी अनुचित कार्य करने पर उनपर क्रोधिक हो जाते है और कुछ अनैतिक बाते भी बोल देते है जिससे उनके भावनाओं को आहत होती है। परिणाम स्वरूप वे अपने संवेग पर नियंत्रित नहीं कर पाते है और दुःख, चिन्ता, अवसादग्रस्त हो जाते है कभी-कभी वे आत्महत्या जैसे अनुचित कार्य भी करने लगते है इस कारण यह आवश्यक है की किशोंरो के विकास के लिए उन्हें उचित परामर्श एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाए।

संदर्भित ग्रंथ सूची

कुमार, जी., पण्डा, बी. एवं सदाफल, यू. (2021). कामकाजी एवं गृहिणी महिलाओं के किशोर छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल* ऑफ़ *एप्लाइड रिसर्च.* 7(8), 17-23.

चैहान, बी.एस. (2013). विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन. *जर्नल* ऑफ़ *एजुकेशन एण्ड* साइकोलॉजी *रिसर्च,* 3(1), 135-138.

झाझडिया, आर.पी. (2015). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल* ऑफ़ *एजुकेशन एण्ड साईंस,* 4(2), 28-34.

शर्मा, डी. एवं दुबे, ए.के. (2012). शहरी विद्यालयों में अध्ययरत छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल* ऑफ़ कॉमर्स, आर्ट एण्ड साइंस. 3(3), 88-93.

सिंह, आर. के. (2017). संवेगात्मक परिपक्वता एवं बुद्धि का शैक्षिक निहितार्थ. *काव इंटरनेशनल जर्नल* ऑफ़ *आर्ट, ह्यूमैनिटिस एण्ड सोशल साईंस,* 4(3), 76-77.